प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि
श्री सु. ना. दुणकर ने मेरे निर्देशन में
यह शोध प्रबंध
एम. फिल. उपाधि के लिए लिखा है।
जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं.
मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं।
मैं संपूर्ण शोध - प्रबंध को
आद्योपांत पढ़कर ही
यह प्रमाण पत्र दे रहा हूँ।

(डॉ. सरयू प्रसाद मिश्र)
एम. ए., पीएच. डी.
शोध मार्गदर्शक

कोल्हापुर -
दिनांक :-- १०-१०-८३

राही मासूम रजा के उपन्यासों का

आलोचनात्मक अध्ययन

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय -

राही मासूम रजा : जीवन और व्यक्तित्व १--९

द्वितीय अध्याय -

राही मासूम रजा के उपन्यासों का सामान्य परिचय १०--१५

तृतीय अध्याय -

राही मासूम रजा के उपन्यासोंका आलोचनात्मक अध्ययन १६--१०९

(अ) आधा गाँव -

(आ) टोपी शुक्ला -

(इ) हिम्मत जौनपुरी

(ई) ओस की बूँद

(उ) दिल एक सादा कागज

(ऊ) सीन-७५

(ए) कटरा बी आर्जू

चतुर्थ अध्याय -

उपसंहार ११०--११५

ग्रंथ सूची ११६--११९

(क) आधार ग्रंथ

(ख) सन्दर्भ ग्रंथ (१) हिन्दी (२) मराठी (३) अँग्रेजी

(ग) पत्रपत्रिकाएँ (१) हिन्दी (२) मराठी

प्राक्कथन

प्राक्कथन

"डॉ. राही मासूम रजा के उपन्यासोंका आलोचनात्मक अध्ययन" यह लघु प्रबन्ध आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत करतेहुये मुझे प्रसन्नता हो रही है । हिन्दी साहित्यकी अभिवृध्दि में अनेक धर्मों के लोगोंने अपना योगदान दिया है । उनमें मुसलमान कवि और लेखकोंकाभी अपना विशेष स्थान है । कबीर, जायसी, रहीम, रसखान जैसे प्राचीन कवियोंसे लेकर इन्शाअल्लाखाँ जैसे खडी बोली के समर्थकों तक ये नाम गिनाये जा सकते हैं । हिन्दू-मुस्लिम जनता को एक मानवीय धरातलपर देखनेकी संत कबीर की परम्परा आज भी जीवित है । राही मासूम रजा जैसे कवि लेखक कड़ी बनकर कबीर की परम्परा को आगे बढ़ानेका प्रयास करते हुये दिखाई देते हैं ।

लघुप्रबंध के लिए विषय का चुनाव करते समय लेखक कवियोंकी एक तालिका विद्यापीठकी ओरसे प्रस्तुत की गई थी । उपन्यास लेखकोंकी तालिकामें मान्यवर और बिर परिचित लेखकोंके नीचे राही मासूम रजा का नाम भी था । राहीजीका नाम फिल्म कथा और संवाद लेखक के रूपमें परिचित था लेकिन आधुनिक हिन्दी साहित्यके इतिहासमें कहीं विशेष उल्लेख देखनेमें नहीं मिला था । उत्सुकतावश मैंने उनके " आधा गाँव " और " ओस की बूँद " दो उपन्यास पढ़े । "आधागाँव" में मुस्लिम जनजीवन का समग्र चित्र मुझे पहली बार मिला तो " ओस की बूँद " में हिन्दू मुस्लिम सम्बन्धोंका एकमानवीय और अनूठा चित्र प्राप्त हुआ । बचपन से कुछ मुस्लिम मित्रों के सम्पर्क में रहनेके कारण यह चित्र मुझे बहुत अभिभूत करता गया । जब कभी समाचार पत्रोंमें हिन्दू-मुस्लिम दंगों के समाचार पढ़ता हूँ, उनायासही मेरे मनमें यह प्रश्न उभरता रहता है कि सदियोंसे एकसाथ रहते आये हुये ये लोग आखिर आपसमें क्यों झगड़ पड़ते हैं ? यही कारण है कि राही के साहित्य की ओर मैं आकर्षित हुआ । राहीने अपने उपन्यासोंमे हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों पर मूलगामी दृष्टिसे विचार कर सामान्य हिन्दू-मुस्लिम जनता के हृदयोंको

खोलकर पाठकोंके सामने रखा है । प्रस्तुत लेखक ने इस लघु प्रबन्ध के माध्यमसे उनके उपन्यासोंमें व्याप्त विचारों को समग्र रूपसे प्रस्तुत करनेका प्रयास किया है ।

डॉ. राही के कुल सात उपन्यास अबतक प्रकाशित हुये हैं । इनमेंसे " आधागाँव" को छोड़कर अन्य किसी उपन्यास की ओर हिन्दी समीक्षकों की विशेष दृष्टि नहीं गई है । इस लघु प्रबन्धमें उनके समग्र उपन्यासोंका उपन्यास तत्वोंके आधारपर आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । इस आलोचना के पीछे समग्र रूपसे उनका साहित्यिक परिचय करना भी एक उद्देश्य रहा है । भारतीयता राहीजीके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है । हिन्दू-मुस्लिम जनता के अंतरंग को तटस्थतासे देखने का उनका दृष्टिकोण तथा सामान्य हिन्दू-मुस्लिम जनता के हृदयोंमें बहनेवाले मानवीय झरनोंका जो साक्षात्कार राहीने अपने उपन्यासोंके द्वारा करवाया है।उसे समग्रतासे प्रस्तुत करनेका प्रयास इस लघु प्रबन्धके निमित्त हुआ है । मेरे विचारसे इस प्रकारका प्रयास शायद पहली बार हुआ है. जिससे राहीका साहित्यिक व्यक्तित्व स्पष्ट हुआ हैं ।

इस लघु प्रबन्ध के पहले अध्यायमें राहीजीके जीवन और व्यक्तित्वपर संक्षेपमें प्रकाश डाला गया है । दूसरे अध्यायमें राहीजीके अबतक प्रकाशित सात उपन्यासोंका संक्षिप्त परिचय दिया गया है । तीसरे अध्यायमें राही के एक एक उपन्यासकी उपन्यासके तत्वोंके आधारपर आलोचना प्रस्तुत की है और अंतिम अध्यायमें उनके उपन्यासोंमें व्यक्त साहित्यिक एवं जीवन विषायक दृष्टिकोण स्पष्ट किया है ।

इस लघु प्रबन्धमें जो विचार व्यक्त किये गये है और जो निष्कर्ष निकाले गये हैं वे प्रस्तुत लेखक के अपने हैं । इनमें कुछ त्रुटियोंका होना स्वाभाविक है । इन त्रुटियोंको स्वीकार करतेहुये इसे आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है । भविष्यमें अति सूक्ष्मतासे उनके साहित्यका अध्ययन और मूल्यांकन करना मेरा अभीष्ट है ।

इस लघु प्रबन्ध लेखनमें मेरे निर्देशक आदरणीय डॉ. सरजू प्रसाद मिश्रासे मुझे बहुमूल्य मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है । समय समय पर दिए गए उनके प्रोत्साहन और

स्नेहशील मार्गदर्शन के कारणही मैं यह लघु प्रबन्ध पूरा कर सका हूँ । उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है । शिवाजी युनिवर्सिटी, राजाराम महाविद्यालय और श्रीमंत दामाजी महाविद्यालय के प्रधानाचार्य और ग्रंथपालोंने आवश्यक ग्रंथ और पुरानी पत्रपत्रिकाएँ समय समयपर उपलब्ध करा कर जो सहयोग दिया है उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ । इनके अतिरिक्त मेरे सहयोगी प्रा.डॉ.पांटणकर, प्रा. सोळुंके और प्रा.पुजारी तथा सांगोलाके प्रा.जाधव आदिने समय समयपर जो प्रोत्साहन और मार्गदर्शन किया है इसके लिए उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

इस लघु प्रबन्धमें मैंने डॉ.राही के उपन्यासों और विचारोंसे सम्बन्धित प्राप्त प्रकाशित सामग्री का दिशा निर्देशन के लिए लाभ उठाया है । उन सभी ग्रंथकारों और पत्र पत्रिकाओं के संपादकोंके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

इस लघु प्रबन्धको समयपर टंकलिखित करने का काम श्री बालकृष्ण रा. भावले ने किया है । उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

दिनांक २० : १० : १९८२. (प्रा. सु. ना. कुलकर)